ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com| Impact Factor: 7.580 |

Volume 5, Issue 3, March 2018

वर्तमान में वैदिक कृषि विज्ञान की उपयोगिता

Dr. Santosh Kumar Sourtha

Associate Professor, Sanskrit, S.N.K.P. Govt. PG College, Neem Ka Thana, Sikar, Rajasthan, India

सार

प्राचीन काल से ही कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की धुरी बना हुआ है। वैदिक ग्रन्थों के अध्ययन से पता चलता है कि तत्कालीन समाज में लोगों के आर्थिक जीवन में कृषि का बहुत अधिक महत्व था। यही कारण है कि वैदिक ग्रन्थों में स्थान-स्थान पर वर्षा के लिए देवताओं तथा नदियों से भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए प्रार्थनाएँ मिलती हैं। उपनिषदों में हमें सर्वप्रथम 'अन्न बहु कुर्वीत' का संदेश सुनाई देता है। आज भी अनेक औद्योगिक और वैज्ञानिक प्रगतियों के होते हुए कृषि पर मानव समाज का अवलम्बन बना हुआ है। 'वैदिक कृषि-विज्ञान' की रचना वैदिक संहिताओं, ब्राह्मणों, आरण्यकों एवं उपनिषदों को आधार बनाकर की गई है। इसके अतिरिक्त यथास्थान पुरातात्विक साक्ष्यों की सहायता से भी प्रतिपादित विषय की प्रामाणिकता को सिद्ध करने का प्रयास किया गया है, इसमें कृषि की प्राचीनता, चर्षणि एवं कृष्टि, कृषि का महत्व, कृषि सम्बन्धी अनुष्ठान एवं देवी-देवता, भू-स्वामित्व, भू-विभाजन, कृषि उपकरण, कृषि की विधियाँ, सिंचाई व्यवस्था, खाद, कृषिनाशक तत्व एवं अन्न आदि विषयों का विशेष रूप से विश्लेषण किया गया है।

परिचय

वेद समस्त ज्ञान – विज्ञान की कुंजी है। वेदों से ही समस्त ज्ञान सम्पूर्ण विश्व में फैला। वेदों के सार रुप ज्ञान में सबसे आवश्यक ज्ञान है – कृषि विज्ञान। कृषि को सस्य कर्म अथवा वेदों के उपवेद के रुप में सस्यवेद भी कहते हैं। कृषि कर्म को ऋषियों ने ही नहीं अपितु पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादूर शास्त्री जी ने भी हमारी आत्मनिर्भरता के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण माना था। इसीलिए उन्होने "जय जवान – जय किसान" का उद्घोष किया था। काश्यप, पाराशरादि मुनियों ने कृषि के वैज्ञानिक पक्ष को लेकर अपने – अपने ग्रंथों की रचनाऐं की थी। बराहमिहिर, भोजादि मध्यकालीन विद्वानों ने भी अपने – अपने ग्रंथों में कृषि सम्बन्धित चर्चाऐं की है। इनके अलावा ब्राह्मण ग्रंथ, वेद शाखाऐं, कल्पसूत्र, ज्योतिषादि ग्रंथों में कृषि सम्बन्धित कथनों का उल्लेख प्राप्त होता है।[1]

प्रस्तुत ग्रंथ में भी ब्राह्मण, आरण्यकों, वेद, शाखाऐं, कल्पसूत्रों को ही आधार बना कर कृषि की चर्चा की गई है। कृषि – कर्म की प्राचीन और अत्यन्त उपयोगी तकनीकों का पुस्तक में वर्णन किया गया है। जिससे आजकल प्रयुक्त होने वाली रासायनिक खाद्य और कीटनाशक के दुष्प्रभावों से बचा जा सकता है तथा प्राकृतिक रुप से निर्मित खाद्य और औषधियों से ही उत्तम गुणवक्तायुक्त फसलों को प्राप्त किया जा सकता है। कृषि की प्राचीनता दर्शाने के लिए पुस्तक में प्राचीन सभ्यताओं के भी प्रमाण तथा चित्रों का संकलन किया गया है। जैव गतिशील कृषि, कृषि की कोई नवीन प्राणाली या पद्धति नहीं है, अपितु यह तो वैदिक कालीन कृषि है| यह एक प्रकार की पारंपरिक कृषि विधा है जिसमे जैविक खादों के समुचित प्रयोग के साथ खगोलीय पिण्डो विशेषकर चन्द्रमाँ की परिभ्रमण के आधार पर कृषि क्रियाओ को संचालन किया जाता है| प्राचीन कृषि की विभिन्न विधाओ यथा वैदिक खेती, अग्निहोत्र कृषि, होमासोल, प्राकृतिक खेती, जैविक खेती, जिसे भारतीय विचारको, ऋषि-मुनियो द्वारा अथक प्रयास से विकसित किया था, "जैव गतिशील खेती" जिसे वर्तमान परिस्थतियो में यूरोप की सस्य जलवायु परिस्थिति के अनुसार ढाला गया है, की विशेष चर्चा की गयी है |[2,3]

कृषि जीवन का मूलाधार है,भारत का पारमपरिक जैविक खेती से बहुत ही पुराना नाता रहा है, नव पाषाण काल से लेकर आज तक हम जैविक कृषि प्राणाली को किसी ना किसी स्वरूप मे अपनाते आ रहे हैं| रासायनिक खादों केविकास से लेकर इसके दुरुपयोग की पराकाष्ठा एवं हानिकारक परिणामो के प्रकटीकरण तक का समय इस जैविक/टिकाऊ खेती/परम्परागत कृषि ने देखा है| विश्व के प्राचीनतम ग्रंथ "ऋग्वेद के अनुसार "कृषि" शब्द की उत्पत्ति "कृष" धातु से हुई है, जिसका तात्पर्य कर्षण क्रिया अर्थात " जुताई" से है| जुताई से ही कृषि क्रिया का शुभारंभ होता है| ऋग्वेद (श्लोक संख्या 34-13) मे भी कृषि कर्म पर विशेष वर्णन मिलता है जिसमे स्पष्ट लिखा है कि[4,5]

|| अक्षैर्मा दीव्य: कृषिमित् कृषस्व वित्ते रमस्व बहुमन्यमान ||

अर्थात् जुआ मत खेलो, कृषि करो और सम्मान के साथ द्रव्य पाओ।

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com| Impact Factor: 7.580 |

Volume 5, Issue 3, March 2018

जैवगतिशील कृषि प्रणाली की उत्पत्ति 1920 के दशक के दौरान ऑस्ट्रियाई दार्शनिक श्री रुडोल्फ स्टेनर द्वारा दी जाने वाली व्याख्यान की एक श्रृंखला से हुई थी। जैवगतिशील कृषि की नींव रूडोल्फ स्टेनर की मानवविज्ञान के गुप्त अंतर्दृष्टि पर आधारित हैं। आध्यात्मिक अनुभव के साथ हमारे आधुनिक मन को जोड़ने के लिए या उन ग्रहों की आत्माओं को जोड़ने के लिए कोई भी प्रयास नहीं किया गया, जो कि हमारी अपनी "सूक्ष्मता" के साथ गुणवत्तापूर्ण खेती के लिए महत्वपूर्ण होने का दावा करते हैं| मानवविज्ञान और बायोडायनामिक खोज को वैश्विक स्तर पर पहचान बनाने के लिए जैवगतिशील कृषको एवं शोधकर्ताओं की मेहनत क्रमश: धीरे-धीरे रंग ला रही है। जैवगतिशील खेती, खेती के लिए एक सम्पूर्ण दृष्टिकोण है जिसमें खेती की प्रक्रिया में सभी हितधारक शामिल होते हैं जैसे कि कृषक, मृदा, पर्यावरण-व्यवस्था, जानवरों और पक्षी जो कि कृषि क्रियाओ में भाग लेते हैं, और इन सब से ऊपर, ब्रह्मांडीय शक्तिया जिनका प्रभाव पृथ्वी पर जीवित प्राणियों पर पड़ता है| इससे यह स्पष्ट होता है की धरती पर रहने वाले जीवों पर ब्रह्मांडीय शक्तियों का प्रभाव वास्तविक है। इन प्रभावों से अवगत होने के कारण जैव-गतिशील खेती (बायोडायनामिक) का अभ्यास किया जाता है। जैवगतिशील कृषि पद्धति से उत्पन्न पदार्थ दूसरे तरीके से की जाने वाली अन्य खेती के तरीकों के अपेक्षा अधिक स्वाद और सुगंध से परिपूर्ण होते हैं। इसे पारिस्थितिक खेती के रूप में भी जाना जाता है, यह आधुनिक भारतीय किसानो को काफी हद तक अज्ञात है। जैवगतिशील खेती का मूल सिद्धांत खेती को एक व्यक्ति और एक पूर्ण इकाई के रूप में ग्रहण करना है। फसल और पशुधन एकीकरण, मिट्टी उन्नयन, पौधे और पशु विकास को महत्व दिया जाता है। किसान भी इस पूरे तंत्र का एक हिस्सा है| रुडोल्फ स्टेनर ने पृथ्वी को भी अन्य सामान्य जीवो की तरह सजीव मानते हुए इसके श्वसन की क्रिया का भी वर्णन किया है| उन्होंने बताया था कि आरोही और अवरोही चंद्रमा की अवधि पृथ्वी की साँस लेना और साँस छोड़ने से संबंधित है। भारतीय सभ्यता हमेशा से पृथ्वी को धरती माता का सम्मान देता आ रहा है| पृथ्वी के सजीव होने या इसमें जीवन को लेकर तमाम धर्मो के ग्रंथो में इसका सविस्तार वर्णन मिलता है |

विचार-विमर्श

जैवगतिशील कृषि की मुख्य रूप से दो मूलभूत आवश्यकताये होती है जो की निम्नलिखित है:

1 जैवगतिशील पञ्चांग

2 जैवगतिशील पदार्थ

1 जैवगतिशील कृषि पञ्चांग

जैवगतिशील कृषि पद्धति मूलत चंद्र चक्रण (चन्द्रमा के उत्थान एवं क्षीणन) पर आधारित है|[6,7] जैवगतिशील कृषि मे जैवगतिशील पदार्थ बनाना, बीज और फसल लगाने के समय एवं उनके कटाई का समय भी चंद्र चक्रण पर निर्भर करता है| एक खगोलीय कैलेंडर जिसे जैवगतिशील कृषि कैलेंडर कहते है जोकि मूलत: चंद्र परिचालन एवं चंद्र की स्थिति के आधार पर रोपण/बीज बोने के लिए इष्टतम तिथि निर्धारित करता है।

चंद्र परिचालन एवं जैवगतिशील कृषि पञ्चांग

जिस तरह से मनुष्यों को विभिन्न कार्यो के लिए पञ्चांग की आवश्यकता है, ठीक उसी तरह से फसलों का भी एक पञ्चांग होता है जिसकी सहायता से जैवगतिशील कृषक अपने कृषि क्रियाओ का संचालन करते हैं। चंद्र परिचालन पौधे की जड़ों की आकार, गठन और उनकी वृद्धि पर जबरदस्त प्रभाव डालता है| अगर हम चंद्र चरण के अनुसार अपनी फसलो की बुआई करें तो किसानों को अच्छी उपज मिल सकती है| चन्द्र परिचालन के आधार पर कृषि क्रियाओ के करने की पद्धति कोई नई बात नही है, यह एक प्राचीन पद्धति है जो हमारे पूर्वजों में प्रचलित थी| चंद्र चक्र के आधार पर खेती के फायदे को अब वैज्ञानिक रूप से साबित कर दिया गया है। जैवगतिशील कृषि क्रियाओ का सम्पादन चंद्र परिचालन पर आधारित फसल पञ्चांग के अनुरूप होता है| जिसका निर्णय राशि चक्र सिद्धांतों के आधार पर किया जाता है।[8,9]

चंद्र परिचालन पर प्रभाव

जैवगतिशील कृषि का मूल सिद्धांत यह है कि चंद्रमा के चलायमान होने कारण ब्रम्हांड में उपस्थित 12 राशि चिन्हो को चार समूहों में विभाजित होने से जुड़ा हैं। चार समूहो का वर्गीकरण उनमें पाये जाने वाले तत्व के आधार पर हुआ है (1) पृथ्वी, (2) जल, (3) अग्नि और (4) वायु| इस प्रकार प्रत्येक समूह का कृषि क्रियाओ के संचालन एवं पौधे के जीवन पर कुछ खास प्रभाव पड़ता है|

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com| Impact Factor: 7.580 |

Volume 5, Issue 3, March 2018

तदनुसार वृषभ, कन्या और मकर राशि पृथ्वी से जुड़ी हुई है और ये जड़ क्षेत्र के विकास में मदद करती है। मिथुन, तुला और कुंभ राशि वायु और सूरज की रोशनी से जुड़े हुए हैं और फूलों के विकास में मदद करते हैं। कर्क, वृश्चिक और मीन को जल से जुड़ी हुई राशि मानी जाती है इसलिए इनका प्रभाव पत्तियों के विकास में माना जाता है| जबकि मेष, सिंह और धनु को फलो और बीज के विकास में मददगार माना जाता है क्योकि ये अग्नि तत्व का प्रतिनिधित्व करते हैं| बीज बोना, पत्तियों पर छिड़काव, पौधे के प्रसार, ग्राफ्टिंग चंद्रमा के पतन चरण (जो कि नए चाँद से 15 दिन पहले) के दौरान किया जाना चाहिए। दूसरी ओर,चंद्रमा के उत्थान चरण (जो कि पूर्णिमा की अवधि से 15 दिन से पहले) के दौरान खेतो की जुताई, खाद का उपयोग एवं पौधरोपण के लिए किया जा सकता है|

मृदा की उर्वरता में सुधार करने और मृदा स्वास्थ्य को निरंतर सुनिश्चित करने के लिए केचुए और सूक्ष्म जीवो की मदद से निर्मित जैविक खाद और कंपोस्ट का भी प्रयोग करते है। रासायनिक कीटनाशकों की जगह जैविक कीटनाशकों का प्रयोग करते हैं और नीम, अरंड एवं पोंगामिया की पत्तियों से तैयार किए गए कीटनाशी का उपयोग कर सकते हैं।

परिणाम

कई सदियों से किसानों का अनुभव एवं वैज्ञानिक प्रयोगों ने यह सिद्ध किया है कि पौधों की वृद्धि पर पूर्णिमा के चन्द्र का उल्लेखनीय प्रभाव होता है। रुडोल्फ स्टेनर के कृषि व्याख्यानो एवं बाद के वैज्ञानिक अनुसंधान के आधार पर, जैवगतिशील कृषि इस बात की मान्यता देता है की चंद्रमा एवं पूर्णिमा के चाँद का प्रभाव सभी जीव जन्तुओ एवम् पेड़ पौधों पर भी पड़ता है|[10,11]

चंद्र ऊर्जा से सबसे अधिक प्रभावित तत्व पानी है (उदाहरण के लिए पौधों में कोशिका द्रव्य)।
चन्द्र को पूर्णिमा की अवस्था तक पहुंचने के 48 घंटों में पृथ्वी में नमी की मात्रा में एक विशिष्ट वृद्धि दिखाई देती है। यही कारण है कि पौधों की वृद्धि को बढ़ावा देने वालो कारको में अचानक वृद्धि देखी जा सकती है।
ऐसा देखा गया है कि पूर्णिमा की अवधि के दौरान बीजो में त्वरित अंकुरण होता है। साथ ही साथ पौधे की वृद्धि भी तेजी से होती है। इस समय चोट या कटाई छटाई के कारण पौधों की वनस्पति क्षतिपूर्ती भी तेजी से होता है| क्योकि इस दौरान पौधों में कोशिका विभाजन एवं कोशिका विकास में विस्तार की प्रवृत्ति होती है।
ध्यान देने योग्य बात ये है कि, इस अवधि के दौरान बीजो में अंकुरण बहुत तेजी से होता है, परन्तु कवक के हमले से ग्रस्त हो सकता है विशेष रूप से गर्म एवं उच्च आर्द्रता की परिस्थितियों में |
ऐसा प्रतीत होता है कि पूर्णिमा के दौरान नमी में वृद्धि के कारण पौधों पर कवक के विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियां प्रदान करता है|
इस दौरान कीटो की गतिविधियो में वृद्धि देखी जा सकती है। विशेष रूप से स्लग और घोंघे का। यहाँ तक की मानव और जानवरों में भी आंतरिक कृमि परजीवी में भी वृद्धि देखी जा सकती है|
पूर्णिमा के प्रभाव के कारण पौधों द्वारा तरल खाद्य पदार्थो का अवशोषण बढ़ जाता है। अक्सर पूर्णिमा में बारिश की प्रवृत्ति होती है।
जैवगतिशील खेती से लाभ

जैवगतिशील खेती करे, स्वावलंबन भरपूर

स्वावलंबित खेती बने, धन -धान्य भरपूर

जैवगतिशील पदार्थ है, औषधि से भरपूर

09 जैवगतिशील पदार्थ है, चमत्कार भरपूर

जैवगतिशील 500 से 508 तक, रामबाण भरपूर

विन्द्रो कम्पोस्ट खाद का, करे प्रयोग भरपूर

किण्वित वानस्पतिक अर्को का, करे उपयोग भरपूर

फसल सुरक्षित जानिए, गुणवत्ता भरपूर
हाथ फैलाना न पड़े, अन्न होए भरपूर

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com| Impact Factor: 7.580 |

Volume 5, Issue 3, March 2018

खेतो से हीरा मिले, मिले दूध भरपूर

जैविक अंश मिलाई धरती मे भरपूर

रसायनो से छुटकारा मिले, मिले उपज भरपूर

विचार नक्षत्र खेती करे, उत्पादन भरपूर

सींग-सिलका खाद का, करे प्रयोग भरपूर

उत्तम उत्पादकता सहित, फसल होए भरपूर

जैवगतिशील खेती का महत्त्व

फिराक ऐ खुराक में, जहर ही खुराक है,

जहर पैदा हो रहा है, जहर ऐ खुराक से

धरती की जहरशानी, खुदगर्जी की है ये निशानी

जेहनी दिवालियापन है, हताशा की हैये निशानी

बंजर बना रहा है रत्न गर्भा जमीन का

बेतहाशा कर रहा है उपयोग जहर का

केचुए पलायन कर रहे, मर रहे है सूक्ष्म जीव

अन्नदात्री को है बचाना, बनाना है, इसे सजीव

हक़ 'उन्हें' भी है, जीने का इस धरा पर

ज्यादा न हो सही, अस्तित्व हो धरा पर

इंसान गिर चुका है, खुद के जमीर से

इतनी भी क्या है जरूरी, मुहब्बत ये जहर से

इतिहास बन ना जाय, मानव की ये मजबूरी

संकट की इस घड़ी में, प्रयास है जरूरी

जब एक ही धरा है, इंसान एक है

सह अस्तित्व से रहना, उद्देश्य एक है

कही मिट न जाय नामो निशा जमीन से

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com| Impact Factor: 7.580 |

Volume 5, Issue 3, March 2018

बचना हमें भी होगा, प्रकृति के प्रकोप से

आना ही होगा हमको, शरण में प्रकृति के

सम्मान देना होगा पृथ्वी 'माँ' के सामान के

रत्न गर्भा है धरती माता, सदियों से हमको पाला

ये सलूक है हमारा, बंजर बना है डाला

बचना हमे तो होगा, कुदरत के इस कहर से

समझौता, है समझदारी, बचने को इस कहर से

घरती को है बचना,जैवगतिशील खेती को है अपनाना,

लालच को है भगाना,इमानदारी को है जगाना[12,13]

निष्कर्ष

इसके अलावा, जैवगतिशील खाद का प्रयोग जैवगतिशील कृषि में प्रचलित है। इन सभी तकनीको का मूल उद्देश्य मृदा में अनिवार्य रूप से सूक्ष्म जीवों को बढ़ाना है, जो कि मृदा पर्यावरण प्रणाली का हिस्सा है। जब ये सूक्ष्म जीव मिट्टी में पर्याप्त मात्रा में होते हैं, उनकी गतिविधियो से पौधों को सभी प्रकार के पोषक तत्व उपलब्ध होने में आसानी होती है। जैवगतिशील कृषि की एक अन्य महत्वपूर्ण अवधारणा, खेत को बाहरी आदानों की आवश्यकता से बचना भी है। खेत के सभी अपशिष्ट को समृद्ध कार्बनिक खाद में परिवर्तित कर दिया जाता है जिसे फिर से खेतों में वापस डाल दिया जाता है। इसके अलावा जैव-गतिशील खेती करने के लिए गाय भी जरूरी है, क्योंकि गाय के गोबर, गाय मूत्र और गाय के दूध का उपयोग किया जाता है।

जैवगतिशील पदार्थ पुनर्नवीनीकरण खनिज, पौधे या पशु खाद के निष्कर्षण आदि होते हैं, जो समय के साथ किण्वित होते हैं, इन जैवगतिशील कृषि पदार्थों को पानी में घोलकर, पतला करके खेत या सीधे पौधो पर छिड़कते है। कैल्शियम (Ca), सिलिका (SiO_2) एवम लोहा (Fe) तत्व अपने विशिष्ट गुणों के कारण मृदा में ह्यूमस को बनाने एवं विघटित करने वाली प्रक्रियाओं को विनियमित करते है जोकि पौधों की जड़ों को मजबूत करने के साथ-साथ स्वस्थ पौधो के विकास के लिए आवश्यक भी है क्योकि ये समृद्ध आधार प्रदान करते हैं। बिना जीवांश के मृदा निर्जीव होती है और इसमें तीन प्रमुख पोषक तत्वों, नाइट्रोजन (एन), फास्फोरस (पी) एवं पोटेशियम (के) पौधो को विकसित करने के लिए अति आवश्यक है। फास्फोरस एवं पोटशियम वायु में मौजूद नहीं होते हैं, अतः जैवगतिशील पदार्थ को कंपोष्ट की खाद में मिश्रित करके मृदा को जैविक समृद्ध करके कृषि किया जाता है। आम तौर पर जैवगतिशील कृषि की मृदाए पोषक तत्वों से भरपूर होती है, जब विशेषकर सेलेनियम (Se) एवं जस्ता (Zn) जैसे सूक्ष्म तत्व से, जिसके कारण ये पौष्टिक समृद्ध फसलों का उत्पादन करती है। जैविक या बायोडायनेमिक खाद के प्रयोग के साथ खेती करने पर मृदा में सूक्ष्मजीवी गतिविधिया, खनिज उर्वरकों और कीटनाशकों के प्रयोग द्वारा खेती करने की अपेक्षा अधिक पायी जाती है। एक अध्ययन से पता चला है कि बायोडायनेमिक पदार्थ, कंपोस्ट विकास को काफी प्रभावित करता है। इसकी होम्योपैथिक दवा के बराबर मात्रा, कंपोस्ट का तापमान पहले आठ हफ्तों में ही समान्य से 3.5 डिग्री सेण्टी ग्रेड तक तापमान को बढ़ा देता है, जो की सर्दियों के मौसम में गोबर से कंपोस्ट की विकास की प्रक्रिया को तेज कर देता है। जैवगतिशील कृषि एवं रासायनिक कृषि के तुलनात्मक अध्ययन से पता चलता है कि जैवगतिशील कृषि में उपयोग की जाने वाली मृदाए उपजाऊ, उत्पादक एवं अधिक लाभदायक होती है।[14]

जैव गतिशील कृषि कई मायने मे जैविक कृषि से भिन्न है, कृषि उत्पादन में प्रयुक्त जैविक पदार्थो का समुचित उपयोग के साथ कृषि क्रियाओ को प्राभावित करने वाले खगोलीय पिंडो में अभिरूचि के साथ नवीन करने की सोच रखने वालो के लिए आवश्यक सामग्री प्रदान करेगा। जैव गतिशील कृषि में चन्द्रमा के गुरुत्वाकर्षण को भरपूर तरीके से उपयोग किया जाता है। जैव गतिशील कृषि जैविक खेती के आगे की विधा है, सभी प्राकृतिक एवं पर्यावरण प्रेमी को सरल एवं समगतिशील टिकाऊ कृषि हेतु अवश्य ही प्रयास करना चाहिए ।[15]

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com| Impact Factor: 7.580 |

Volume 5, Issue 3, March 2018

संदर्भ

1) भारतीय कृषि से जुड़े महत्वपूर्ण तथ्य और जानकारी
2) भारत का कृषि विज्ञान और कृषि दर्शन
3) भारतीय कृषि: चुनौती की ओर
4) भारतीय कृषि को पुनर्भाषित करने की जरुरत—सुनील अमर
5) Indian Agriculture. U.S. Library of Congress.
6) Indian Council for Agricultural Research Home Page
7) Website of The Indian Farmers Association
8) कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण
9) Commodity Research, Food and Agribusiness, Commodity News and Analysis (in English) (based in India)
10) Agropedia - One Stop Shop For All Kinds Of Information On Agriculture In India
11) Agriculture Commodity Market News - Agri Commodity News, Rates, Daily Trading Prices, The Trade News Agency NNS - Daily commodity prices of Agricultural and Agri based Commodities from different Markets of India. Indian Agriculture Industry business to business (b2b) News and Directory (in English) (based in India)
12) अच्छी बारिश ने बढ़ाई बंपर फसल की उम्मीद (३ जुलाई 2016)
13) भारतीय कृषि व्यवस्था : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य एवं भविष्य की योजना
14) ↑ "कृषि क्षेत्र: विशेषताएं". पत्र सूचना कार्यालय, भारत सरकार. 9 जुलाई 2014. मूल से 14 जुलाई 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 9 जुलाई 2014.
15) ↑ कृषि निर्यात में भारत ने बनाया नया रिकॉर्ड (अप्रैल 2015)